



INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 4; Issue 5; 2026; Page No. 111-113

Received: 15-07-2026
Accepted: 23-08-2026
Published: 12-09-2026

भारतीय ज्ञान परंपरा और मैथिलीशरण गुप्त

डॉ. संतोष कुमार सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.23388656>

Corresponding Author: डॉ. संतोष कुमार सिंह

सारांश

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम, सतत और समग्र ज्ञान परंपराओं में से एक है। इसका प्रभाव केवल अध्यात्म और धर्म तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसने संस्कृति, सामाजिक संरचना, राजनीतिक व्यवस्था, भौगोलिक चेतना, विज्ञान और मानव-मूल्यों को भी गहराई से प्रभावित किया है। यह शोध-पत्र भारतीय ज्ञान परंपरा की इन्हीं विशेषताओं का अध्ययन मैथिलीशरण गुप्त के साहित्य के संदर्भ में करता है। गुप्त जी ने अपने काव्य, विशेषतः भारत-भारती के माध्यम से भारतीय अतीत, ज्ञान-विज्ञान, दर्शन, नैतिकता और मानवीय मूल्यों का पुनर्पाठ किया। उन्होंने भारतीय दृष्टि को अखंड, समन्वयी और मानव-कल्याणकारी सिद्ध करते हुए पाश्चात्य खंडित दृष्टि के बरक्स स्थापित किया। यह शोध-पत्र यह प्रतिपादित करता है कि मैथिलीशरण गुप्त भारतीय ज्ञान परंपरा के केवल कवि नहीं, बल्कि उसके आधुनिक प्रवक्ता हैं, जिन्होंने राम-कृष्ण परंपरा, वेद-पुराण, दर्शन, विज्ञान और मिथकीय कथाओं के माध्यम से एक व्यापक सांस्कृतिक चेतना का निर्माण किया।

मूलशब्द: भारतीय ज्ञान परंपरा, मैथिलीशरण गुप्त, भारत-भारती, अहिंसा, दर्शन, विज्ञान, राम-कृष्ण परंपरा, मानव कल्याण

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परंपरा का स्वरूप अत्यंत व्यापक और समग्र है। यह परंपरा केवल धार्मिक आस्था या दार्शनिक चिंतन तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र—अध्यात्म, धर्म, संस्कृति, समाज, राजनीति, विज्ञान और नैतिकता—को प्रभावित किया है। भारतीय ज्ञान परंपरा की सबसे बड़ी विशेषता इसकी निरंतरता और समन्वयशीलता है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक यह परंपरा विभिन्न रूपों में जीवित रही है। आधुनिक हिंदी साहित्य में मैथिलीशरण गुप्त ऐसे कवि हैं, जिन्होंने इस परंपरा को राष्ट्रीय चेतना के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया। द्विवेदी युग के इस महत्वपूर्ण कवि ने औपनिवेशिक दासता के समय भारतीय अतीत, संस्कृति और ज्ञान परंपरा को पुनः प्रतिष्ठित करने का कार्य किया। उनका साहित्य केवल काव्य नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण का दस्तावेज़ है। इस शोध-पत्र का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध आयामों को

मैथिलीशरण गुप्त के साहित्य के आलोक में समझना है। भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल आधार समग्रता है। यहाँ ज्ञान को खंडों में नहीं बाँटा गया। अध्यात्म और भौतिकता, धर्म और विज्ञान, मनुष्य और प्रकृति—इन सबके बीच विरोध नहीं, बल्कि समन्वय स्थापित किया गया। यही कारण है कि भारतीय दृष्टि को 'अखंडित दृष्टि' कहा जाता है। इस परंपरा में ज्ञान केवल बौद्धिक साधना नहीं, बल्कि जीवन जीने की पद्धति है। वेदों में ऋत की अवधारणा, उपनिषदों में आत्मा-ब्रह्म का चिंतन, गीता में कर्मयोग—ये सभी ज्ञान को जीवन से जोड़ते हैं। यह ज्ञान मनुष्य को केवल व्यक्तिगत मुक्ति नहीं, बल्कि सामाजिक और वैश्विक कल्याण की ओर प्रेरित करता है। अन्य अनेक संस्कृतियों में इतिहास हिंसा, युद्ध और विजय की कथा के रूप में सामने आता है। वहाँ अति-हिंसा को शक्ति और सामर्थ्य का प्रतीक माना गया। इसके विपरीत भारतीय संस्कृति की मूल यात्रा हिंसा से अहिंसा की ओर रही है। जैन और बौद्ध दर्शन इस अहिंसक

चेतना के सबसे सशक्त उदाहरण हैं। महावीर और बुद्ध ने करुणा, सहअस्तित्व और जीवमात्र के कल्याण को जीवन का केंद्र बनाया। यह अहिंसा केवल शारीरिक हिंसा के त्याग तक सीमित नहीं, बल्कि मानसिक और वैचारिक स्तर पर भी लागू होती है। रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों में भी युद्ध अनिवार्य परिस्थिति में धर्म की रक्षा के लिए होता है, न कि सत्ता या विस्तार के लिए। राम-रावण युद्ध असत्य पर सत्य की विजय का प्रतीक है, जिसका उद्देश्य मानव कल्याण और नैतिक स्थापना है। भारतीय ज्ञान परंपरा के केंद्र में राम और कृष्ण की कथाएँ हैं। ये कथाएँ केवल ऐतिहासिक या पौराणिक आख्यान नहीं, बल्कि नैतिक और दार्शनिक शिक्षाओं का भंडार हैं। राम मर्यादा, त्याग और सत्य के प्रतीक हैं, जबकि कृष्ण कर्म, प्रेम और लोकसंग्रह को। सीता का अपहरण और राम-रावण युद्ध केवल व्यक्तिगत संघर्ष नहीं, बल्कि धर्म और अधर्म के बीच संघर्ष है। इसमें मनुष्य ही नहीं, बल्कि वन, पशु और समस्त प्रकृति सहभागी है। यह समग्र दृष्टि भारतीय ज्ञान परंपरा की विशिष्टता है, जहाँ मनुष्य और मनुष्येतर प्राणी की मुक्ति का प्रयास समान रूप से किया जाता है। विष्णु पुराण के श्लोक यह स्थापित करते हैं कि भारत भूमि केवल भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और सांस्कृतिक चेतना का केंद्र है। यहाँ तक कि देवता भी भारत भूमि की महिमा का गान करते हैं। यह अवधारणा भारत को 'पुण्यभूमि' के रूप में प्रतिष्ठित करती है। ऋग्वेद के मंत्र सहार्द, प्रेम, समन्वय और प्राणीमात्र के कल्याण की भावना से भरे हुए हैं। "संगच्छध्वं संवदध्वं"—जैसे मंत्र सामाजिक एकता और सामूहिक चेतना का संदेश देते हैं। यह दृष्टि भारतीय ज्ञान परंपरा को वैश्विक मानवीय मूल्यों से जोड़ती है। जब विश्व की अनेक सभ्यताएँ प्रारंभिक अवस्था में थीं, तब भारत में सिंधु घाटी और मोहनजोदड़ो जैसी उन्नत सभ्यताएँ विकसित हो चुकी थीं। नगर नियोजन, जल प्रबंधन और सामाजिक संगठन यह सिद्ध करते हैं कि भारतीय ज्ञान परंपरा केवल आध्यात्मिक नहीं, बल्कि वैज्ञानिक भी थी। यह वैज्ञानिक चेतना आगे चलकर गणित, खगोल और चिकित्सा में विकसित हुई। यही परंपरा आधुनिक भारत की वैज्ञानिक दृष्टि की आधारशिला बनी। मैथिलीशरण गुप्त की भारत-भारती भारतीय ज्ञान परंपरा का आधुनिक घोषणापत्र कही जा सकती है। इसमें उन्होंने भारत के अतीत, वर्तमान और भविष्य का समग्र चित्र प्रस्तुत किया। गुप्त जी का मानना था कि भारत ने विश्व को ज्ञान, व्यवहार, व्यापार और विज्ञान-चारों क्षेत्रों में दिशा दी है। भारत-भारती में अतीत-गान केवल गौरव-गान नहीं, बल्कि आत्मबोध का माध्यम है। यह औपनिवेशिक दासता के समय आत्महीनता से ग्रस्त समाज को अपनी जड़ों से जोड़ने का प्रयास है। द्विवेदी युग के कवियों ने अतीत-गान की परंपरा का अनुसरण करते हुए अंग्रेजी शासन के विरुद्ध जनमानस को जाग्रत किया। मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' और अन्य कवियों ने साहित्य को राष्ट्रीय चेतना का माध्यम बनाया। गुप्त जी ने यह स्पष्ट किया कि भारतीय दृष्टि अखंड है, जबकि पाश्चात्य दृष्टि खंडित रही है। पश्चिम में ज्ञान को अलग-अलग अनुशासनों में बाँटा गया, जबकि भारत में ज्ञान समग्र जीवन दृष्टि रहा है। मैथिलीशरण गुप्त ने अपनी रचनाओं में सोलह विद्याओं का उल्लेख कर भारतीय ज्ञान की व्यापकता को रेखांकित किया—वेदविद्या, पितृविद्या,

राशिविद्या, नक्षत्रविद्या, देवविद्या, भूतविद्या, छंदविद्या, ज्योतिष, खगोल आदि। यह सूची भारतीय ज्ञान परंपरा के बहुआयामी स्वरूप को स्पष्ट करती है। दर्शन के क्षेत्र में पतंजलि, कणाद, जैमिनी और व्यास यूनान, रोम और जर्मनी के दार्शनिकों से बहुत पहले स्थापित थे। गुप्त जी मोलियर और विलियम जैसे पश्चिमी विचारकों के कथनों का हवाला देते हुए यह सिद्ध करते हैं कि पायथागोरस जैसे दार्शनिक भारत के ऋणी रहे हैं। आर्यभट्ट, दशमलव पद्धति, शून्य, शुल्बसूत्र और रेखागणित—ये सभी भारतीय वैज्ञानिक चेतना के प्रमाण हैं। वेधशालाओं की परंपरा भी इसी ज्ञान की निरंतरता को दर्शाती है। चरक संहिता, शल्य चिकित्सा, नाडी विज्ञान और मानसिक-दैवी-आसुरी चिकित्सा पद्धतियाँ यह सिद्ध करती हैं कि भारतीय चिकित्सा परंपरा अत्यंत विकसित थी। यह ज्ञान अनुवाद के माध्यम से विश्व में फैला और आधुनिक चिकित्सा को प्रभावित किया। व्याकरण ग्रंथों और भाषा-चिंतन ने भारतीय ज्ञान को संरक्षित और प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मैथिलीशरण गुप्त ने राम-कृष्ण के साथ-साथ दधीचि, हरिश्चंद्र, ध्रुव, अभिमन्यु, सावित्री, उर्मिला और उर्वशी जैसे पात्रों को पुनः सामने लाया। ये पात्र त्याग, सत्य, प्रेम और वचनबद्धता के आदर्श हैं। गुप्त जी ने विस्मृत कथाओं को पुनर्जीवित कर नई पीढ़ी का मार्गदर्शन करने का प्रयास किया है। वर्तमान संदर्भ में गुप्त जी मनुष्य और मनुष्येतर संबंधों की ओर ध्यान आकृष्ट करते हैं। युधिष्ठिर और स्वान, शकुंतला और प्रकृति—ये प्रसंग भारतीय ज्ञान परंपरा की पारिस्थितिक चेतना को उजागर करते हैं। 'अतिथिदेवो भव' और मानव कल्याण की अवधारणा इसी चेतना का विस्तार है। भारतीय ज्ञान परंपरा मानव कल्याण, समन्वय और सहअस्तित्व की परंपरा है। मैथिलीशरण गुप्त ने इस परंपरा को आधुनिक संदर्भ में पुनः प्रतिष्ठित किया। उनका साहित्य हमें यह स्मरण कराता है कि भारत की शक्ति उसकी अखंड दृष्टि, नैतिक मूल्यों और मानवीय चेतना में निहित है। आज के वैश्विक संकटों के बीच यह परंपरा पहले से अधिक प्रासंगिक हो उठी है।

संदर्भ

1. गुप्त, मैथिलीशरण — भारत-भारती प्रकाशक: लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
2. गुप्त, मैथिलीशरण — साकेत प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3. गुप्त, मैथिलीशरण — यशोधरा प्रकाशक: साहित्य सदन, झाँसी
4. वाल्मीकि — रामायण (गीता प्रेस संस्करण) प्रकाशक: गीता प्रेस, गोरखपुर
5. वेदव्यास — महाभारत प्रकाशक: गीता प्रेस, गोरखपुर
6. ऋग्वेद (सायण भाष्य सहित) प्रकाशक: चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी
7. विष्णु पुराण प्रकाशक: गीता प्रेस, गोरखपुर
8. भगवद्गीता (शंकराचार्य भाष्य) प्रकाशक: चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन,
9. दिनकर, रामधारी सिंह — संस्कृति के चार अध्याय प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

10. द्विवेदी, हजारीप्रसाद – साहित्य और संस्कृतिप्रकाशक: राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
11. द्विवेदी, हजारीप्रसाद – भारतीय संस्कृति के चार अध्यायप्रकाशक: वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
12. शुक्ल, रामचंद्र – हिंदी साहित्य का इतिहासप्रकाशक: लोकभारतीप्रकाशन, इलाहाबाद
13. शर्मा, रामविलास – भारतीय संस्कृति और हिंदी साहित्यप्रकाशक: राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
14. कोसांबी, डी.डी. — Myth and RealityPublisher: Popular Prakashan, Mumbai
15. थापर, रोमिला — Cultural PastsPublisher: Oxford University Press, New Delhi
16. कपूर, कपिल — Indian Knowledge SystemsPublisher: DK Printworld, New Delhi
17. चट्टोपाध्याय, देबिप्रसाद — Science and Society in Ancient IndiaPublisher: People's Publishing House, New Delhi
18. सेन, अमर्त्य — The Argumentative IndianPublisher: Penguin Books, New Delhi
19. गाडगिल, माधव — Ecology and EquityPublisher: Penguin India, New Delhi
20. शिवा, वंदना StayingAlivePublisher: Zed Books, London
21. Pollock, Sheldon — The Language of the Gods in the World of MenPublisher: University of California Press, Berkeley
22. Fairclough, Norman — Language and PowerPublisher: Longman, London
23. Williams, Raymond — Culture and SocietyPublisher: Columbia University Press, New York
24. Eliade, Mircea — Myth and RealityPublisher: Harper & Row, New York
25. Dundes, Alan — Folk IdeasPublisher: University of Chicago Press, Chicago
26. नंदी, आशीष — The Intimate EnemyPublisher: OxfordUniversityPress, New Delhi
27. चौधुरी, सुकांत — Tradition and ModernityPublisher: Oxford University Press, New Delhi
28. मुखर्जी, मीनाक्षी — Realism and RealityPublisher: Oxford University Press, New Delhi
29. मिश्र, महादेव प्रसाद — लोक साहित्यप्रकाशक: लोकभारतीप्रकाशन, इलाहाबाद
30. त्रिपाठी, नगेन्द्र — लोक साहित्य का समाजशास्त्रप्रकाशक: वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.